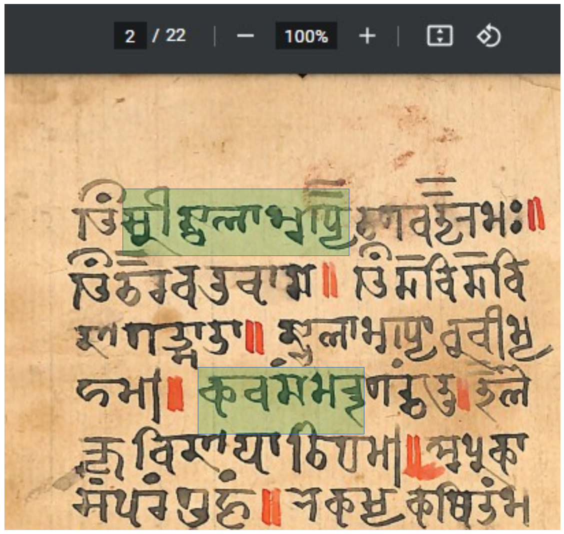
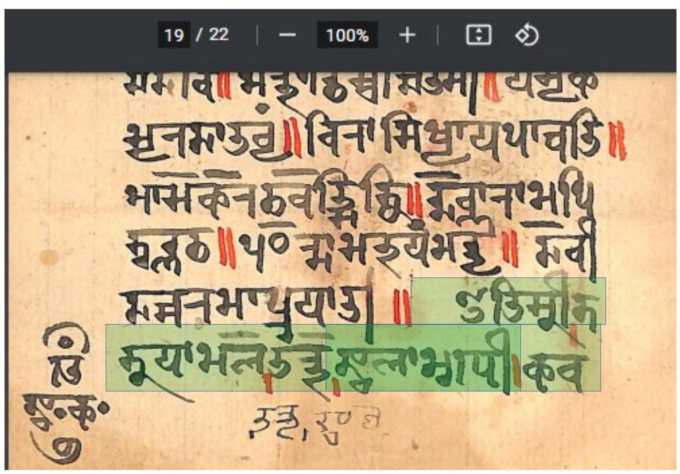
anantnag 4.pdf

Manuscript Title : Shri Jwalamukhi Kavacha Mantram (From Rudrayamala)





ਗ॥ ਵਿਨਾਭਨਾਨ ਮਿਤ੍ਰਿ: ਸ੍ਰਾ॥
ਤ੍ਰਵੰਸਿਨਭੰਸ੍ਰਗਿ॥ ਸ੍ਰਵਤ੍ਰਵ੍ਰਮ
ਸਤਹ॥ ਤਖ੍ਰਾਯ ਮਾਂ ਪ ਕ੍ਰਯਸ॥
ਨਿਤ੍ਰਕ੍ਰਯਾਣ ਸਿਖ੍ਰਾਯ॥ ਨਵ
ਤਾਂਏ ਕਸਸਤ॥ ਸ੍ਰੀ ਸਰਵਾਸ॥
ਮਤ੍ਰਾਥਵਸਮਸ੍ਰੀ ਯੂੰ॥ ਰ ਕੈਥਾ

ਪਿ
ਤਿ
੦.੪
੦

ਕਿਛੁ ਭਯਾ ॥ ਸੁਯੰ ਭਮ ਧੂਮਾਂ ਸ
ਯੰ ॥ ਨਉ: ਸਭੈ ਕੁ ਸਸੁਮ ॥ ਹੈਰਵਤ
ਵਾਮ ॥ ਧੂਨੇ ਤੇ ਸੈ ਵਮ ਘਾ ਕ ॥ ਭਾ
ਯ ਕਾਲ, ਹ ਗਣੁ ਕੁ ॥ ਕਵਸ ਭਨੁ
ਨਨੁਸ ॥ ੫੦ ਜੀ ਯ ਪਰਾਣ ਸਭਾ ॥
ਭਯ ਨਾਭ ਤੁ ਭਾ ਭਾਨਸ ॥ ਨੇਵਕੁ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मूलं वः कीलकं ॥ मडचनद
लक्ष्यार्थं ॥ ह्लाभापीथीह
उं ॥ कक्षापठे विनियोगः ॥ अ
घणनभा ॥ ठिठरुडूकुां
स्तुमत्रिकभापी ॥ भापीनुङ
कः मुनीभा ॥ भरुः ठ ह भाग

ॐ वं द्रवीभुगी ॥ गं णां फं टं ॐ क्रौः फें

ह्रीं ॥ क्रुं भद्राक्षं डुरें ठुगी ॥ मंफं लूं

भुजे पाप्य ॥ फ्लीफणुं ह्रीं फ्रं: अम ॥

घंफंठं नुं कुं म्रिं पाप्य ॥ फं भ ह्रीं श्रीं क्रुः

ण्णया ॥ पं ढं वं ह्रीं क्लिं: पाश्रो ॥ भक

नी पाउ भभभा ॥ रुं भ यं रं श्रीं फ्रें ल्वं

नाठिं भंवडु कटक ॥ मंधंमं फंम

फ पातु ॥ ठुहंभ पुहकस्त्री ॥ लक्षः

पातु भग लिंगं ॥ ह्रीं श्रीं लिक्ष कि

भिनी ॥ पिंक्लीं पातु भभी म्ले ॥ वाक्.

लीवं फ्रेः उष ॥ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं फ्रुं

फ्रुं पातु ॥ जंघे भ पातु भमक ॥ ऐं ि

क्लीं भ्रैः वन्द्रलीं ॥ स्त्फ्रपाय क्ष्म

भम ॥ ॐ स्त्रीं भ्रैः क्लीं भरूपाय ॥

ह्रू नभतुल भ्रूदरी ॥ ॐ स्त्रीं ह्रीं क्लीं

डुवयम ॥ तुल्लै ऐं स्त्रीं भभाव्तु ॥ ॐ

क्लीं ह्रीं ह्रीं क्लि पाय्या ॥ हुल्लीं ह्रीं ह्लूं फैः

डुलभा ॥ ॐ ध्रीं स्त्रीं पण्डै ह्फ्रौः पाय ॥

श्रीं ह्रीं ऐं क्लीं क्रौं ः अस्त्र ॥ धाराभित्रा
ष्टिपदत्तं ॥ ह्रीं श्रीं भवा कालीअस्त्र ॥ ऊ
र्ध्वं भं पातु ह्रैं र क्लीं ॥ दक्षमुण्डक्लीं नडिम
भं ॥ स्कन्दजं पातु भं प्रच्यं ॥ वं वाराहीमि
वात्सयं ॥ ह्रीं ह्रीं ऊं श्रीमां भं पातु ॥ ह्रीं
उग्रीतुलकामिनी ॥ नारसिंहीक्रौंः

ऐं क्लीं॥ वायव्ये पातु मां सदा॥ ॐ श्रीं ह्रीं
ऐं सौः भर्गी॥ पश्चिमे पातु मां सदा॥ ॐ
ह्रीं स्त्रीं नैर्ऋत्ये पातु॥ मातङ्गी मां सुरक्ष
तु॥ ११॥ ॐ ह्रीं क्लीं सदा पातु॥ दक्षिणे
तु कालिका॥ ॐ श्रीं ऐं क्लीं सदा
प्रेया॥ मां उग्रा सदा पातु॥ ॐ वां स

ॐ
कु॰ क॰
१

मांग्निमैरव ॥ कृं ह्रीं मक्लिणं कालि
का ॥ डिसं ह्रीं फिं ह्रीं मचुकांलं भमफ पतु ॥
पें भैः ह्रिय्रम्रकरी ॥ भाल ठयम
क्लृं क्लिं ॥ पीकायं योगिनी ठयं ॥ डिं
डिह्रींसुं हृकारे पतु ॥ मेवी क्लंभ
पींभम ॥ ॐ ह्रीं मं कवमं थलुं ॥

[illegible]

मंतेवि॥ भन्तुणंठमत्तिआ॥ यम्रक

म्रनमन्ठवा॥ विना मिथ्याय पावाउ॥

भामेकेन ठवाङ्कि क्रि॥ म्रवूनाभपि

मल्लठ॥ ५० म भरुयंभदू॥ मवी

मनभाप्यपाउ॥ ७ठिम्रीक

मुयाभल्लउतु मुलाभापी॥ कव

ह्रि

मु॰कं॰

७

मन्तु पुव

सं अमृत्ठभ अभाभुभा ॥ ॥ ॥

ति श्रीसुभ्रंवडा ॥ ततउ ॥ म इत्तुसि ति

डीयम्र ॥ तुगे अभाभुभा ॥ ॥ ॥

४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ ५ ॥ ५

॥ ति उद्धड ॥ ॥